# सफल कहानी – दीपा पाल

**ग्राम –राधापुर**

**तहसील –ओरछा**

**जिला –निवाड़ी,मध्य प्रदेश**

आजीविका –जाने सुने और समझे

“कोई चलता पद  चिन्हों पर कोई पद चिन्ह बनाता है पद चिन्ह बनाने वाला ही इस जग में पूजा जाता है ”

ऐसी ही कहानी है राधापुर की रहने बाली दीपा पाल की जो की एक छोटे से गाँव राधपुर की रहने बाली है जहाँ पर लडकियों को गाँव से बाहर नहीं निकलने नहीं दिया जाता है और साथ में पढाई लिखाई को लेकर भी बहुत ज्यादा समस्या आती है सिर्फ 5 या फिर 8 कक्षा तक ही पढाया जाता है लेकिन कहा जाता है की अगर हमने कोई भी बात मन में ठान ली है बस उसी लक्ष्य को लेकर हमें आगे बढ़ना चाहिए  ऐसा ही किया राधापुर की रहने बाली दीपा पाल ने 5 वी की पढाई कर कर घर पर बैठी थी सोच रही थी की हम भी कुछ करे

घर पर जब भी खाली बैठी रहती तो कुछ न कुछ बनाती  रहती जैसे की झूमर ,पांव पोस,आदि लेकिन एक समस्या थी की हम इस कार्य को कैसे करे कोन हमारे चीजो को देखेगा कहा पर हम इस चीज को बैचेगे रेडियो की नियमित क्षोता थी एक दिन कार्यक्रम चल रहा था की हम अपनी आजीविका को कैसे चला सकते है फिर क्या था सोने सुहागा हो गया फिर क्या था लक्ष्य था रास्ता भी मिल गया फिर हमने रेडियो पर फ़ोन लगाया और कहा की हमें अपना स्वयं का व्यवसाय करना है हमें मार्गदर्शन दे फिर एक दिन रेडियो बुंदेलखंड से मनीष और वर्षा आई उनको हमने अपनी हाथ से बनी झूमर बताई और कहा की हम इसको बड़े स्तर पर करना चाहते है फिर क्या था रास्ता मिला और हम  पहुच गए बैंक के पास और बैंक मेनेजर को अपना प्लान बताया की ओरछा रामराजा सरकार की नगरी है और यहाँ पर देश विदेश से लोग घुमने के लिए आते है और ओरछा जैसे शहर में व्यवसाय को लेकर सम्भावनाये बहुत है और ये हमारा व्यवसाय बहुत अच्छे से चलेगा बैक मेनेजर ने हमारी बात को मन और कहा इस कार्य को करने के लिए कितने पैसे की जरुरत रहेगी तो हमने कहा की २०००० रुपये की सिर्फ बस उन्होंने मेरा पैसा स्वीकार कर दिया और हमने अपने कार्य को शुरू

कर दिया फिर क्या था सोने पै सुहागा और आज हम 8 हजार रूपए माह कमाते है पहले जो माँ बाप हमारा साथ नहीं देते थे आज बो हमारे इस कार्य से बहुत खुश है और जहा पहले समाज हमारे घर बालो से कहते थे की तुम अपनी लड़की को घर से बाहर क्यों भेजते हो,वो भी अकेले फिर वही समाज अब हमारी तारीफों के पूल बांधने से रुकते नहीं जहा एक ओर समाज का डर था वही दूसरी ओर एक हमारा लक्ष्य था की हम अपने कार्य को किस तरीके से अंजाम दे,लेकिन मन में संकल्प था आत्मविश्वास था,तो हम उसी विश्वाश के साथ आगे बड़ते चले गये और अपनी मंजिल को हांसिल कर लिया और इसके लिए हम रेडियो बुंदेलखंड का बहुत बहुत धन्यवाद करते है जिन्होंने हमें सही दिशा और मार्गदर्शन दिखाया!